आदर्श बनने के लिए सत्कर्म करते रहें

प्रस्तुति - पंकज गर्ग, वैज्ञानिक 'ब'
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान , रूड़की

कर्म का भोग सबको भोगना पड़ता है , भोग फल से कोई बचना भी चाहे तो बच नहीं सकता , पर विचार से भोग फल हल्के हो जाते हैं । भगवान का नाम संजीवनी है कैसी भी विषम परिस्थिति हो , शक्ति व प्रसन्नता मिलती है । विषमता वरदान बन कर आती है । सुख-दुःख , दिन-रात , अनुकूलता-प्रतिकूलता बहुत दिनों तक नहीं रहती । भगवान की कृपा है , हर परिस्थिति में प्रसन्न रहता सीखें ।

आदर्श बनने के लिए सत्कर्म आवश्यक है । अच्छे रास्ते में कभी - कभी ठोकर लग जाती है । किसी जन्म का प्रारब्ध मानकर भोगने के लिए तैयार रहना चाहिए । सांसारिक कार्य कभी पूरे नहीं होते । हमारे दादा-परदादा व पूवर्ज पूरे न कर पाये तो हम कैसे कर पायेंगे ?

नदी , सूर्य , वृक्ष , पृथ्वी - सभी सेवा भाव है , केवल मनुष्य स्थायी है । हम अपनी बुद्धि द्वारा भगवान को भी धोखा देने की कोशिश करते हैं । सोचते हैं कि हमारी गलती चालाकी को कोई समझता नहीं । निष्काम सेवा हमारा परम लक्ष्य होना चाहिए । परमार्थ सेवा बिन सब बेकार है ।

लोक व्यवहार में भी वस्तु का भाव गिरता है तो करोड़पति सड़क पर आ जाता है और भाव बढ़ते ही रातों-रात , एक दिन में व्यक्ति माला-माल हो जाता है । भाव का ही सारा खेल है । सत्संग द्वारा भाव को बनायें । हमारे जीवन में कहीं न कहीं मिलावट व बनावट है । समस्याओं से जूझता मनुष्य सत्संग में शान्ति पाता है । सत्संग बिना जीवन का समाधान नहीं । समाधान वस्तु में नहीं , भोग में नहीं , हमारे अन्दर है ।

जहाँ शब्द है , अर्थ वहीं है । सूर्य की किरणें- सूर्य के साथ है , प्रश्न में उत्तर छिपा है। जहाँ शंका है वहाँ समाधान है और जहाँ बन्धन है मुक्ति वहीं है । पढ़ने से यह बात देर से समझ आती है । जो जन्म लेता है उसका मरण निश्चित है । मृत्यु के पंजे से कोई बचता नहीं। सब मौत के आवेश में समा जाते हैं । मृत्यु सबकी होती है , जिसकी मृत्यु उसका पुनर्जन्म ।

पृथ्वी के अन्दर बोये हुए बीजों की दो स्थितियाँ होती हैं । सड़ते सभी बीज हैं पर कुछ बीज जमकर नये पौधे और वृक्ष के रूप में परिवर्तित होते हैं तथा कुछ बीज कीड़े-मकोड़ों का भोजन बनकर रह जाते हैं । उनका अस्तित्व समाप्त हो जाता है । हमें विचार करना चाहिए कि हम किस प्रकार के बनें । सड़ने से बच नहीं सकते , चाहे हीरा-मोती से जड़े सोने के डिब्बे में भी रखे जाएं ।

सही स्थान पर बोया गया सुकर्म का बीज महान फल देता है । हम सुकर्म करते रहें सुकृत्य का बोया बीज परिवर्धन करेगा , संवर्धन करेगा । शब्दों की अपेक्षा कर्म अधिक जोर से बोलते हैं , सुकृत्य के बीज व्यर्थ नहीं जाते । हम लोग लगे रहते हैं परिवार के भरण-पोषण में , उसको खुश करने में । हम जानते हैं देखते हैं कि परिवार वाले तभी तक साथ देते हैं जब तक उनकी स्वार्थ पूर्ति होती है और उसके बाद हमें उस तरह छोड़ दिया जाता है जिस प्रकार तांगे से उतरे घोड़े को बच्चों से ईंट-पत्थर खाने को छोड़ दिया जाता है ।

(स्वामी शारदानन्द सरस्वती),
एकरसान्द आश्रम , मैनपुरी